International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Special Issue on Interdisciplinary Horizons in Multidisciplinary Studies
Research and Analysis | January 2024
Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

हिंदी पत्रकारिता में गांधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

Prof. Sudhir Soni

Principal, Government PG College, Bassi, Jaipur, Rajasthan, India

सार

यह पेपर महात्मा गांधी की संचार की कला को अरस्तू के संचार के तीन चर या रेटोरिका के साथ बराबर करने का प्रयास करता है। इसमें गांधीजी के आदर्श चरित्र, उनकी तार्किक सोच और जनता में भावनाएं जगाने की क्षमता पर प्रकाश डाला गया है। यह एक कुशल पत्रकार के रूप में गांधी पर प्रकाश डालता है और गांधीवादी पत्रकारिता को चार प्रकारों में वर्गीकृत करता है: गांधी की सार्वजनिक पत्रकारिता, गांधी की पत्रकारिता में नैतिकता, गांधी की शांति पत्रकारिता और गांधी की विकास पत्रकारिता। यह वर्तमान समाज के लिए गांधी के प्रेरक संचार और पत्रकारिता के उद्देश्यों की प्रासंगिकता को उजागर करके समाप्त होता है।

परिचय

महात्मा गांधी शांति के महान दूत, सत्य की खोज में अतृप्त आत्मा, दक्षिण अफ्रीका में अल्पसंख्यक अधिकारों के लिए लड़ने वाले, कुशल राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे। वह मानव जाति के लिए आवश्यक प्रेरणा हो सकते हैं। अपने तरीके से, गांधीजी एक निपुण कलाकार और कुशल शिल्पकार, एक दृढ़ वैज्ञानिक और एक चतुर विचारक थे। यह सब उनकी संचार कला की क्षमता और पत्रकारिता में नैतिक मूल्यों के प्रति उनके जुनून से संभव हुआ। उन्होंने सोचा, प्रार्थना की, यात्रा की, बात की, हर जगह अपने साथी-नागरिक की अंतरात्मा से अपील की। उन्होंने माना कि राय बनाने और लोकप्रिय समर्थन जुटाने के लिए संचार सबसे प्रभावी उपकरण है। उन्होंने लोगों को प्रभावित करने के लिए अपनी विशेष कला विकसित की। उन्होंने अपनी कला में सामंजस्य विकसित किया। गांधी की संचार कला अरस्तू की रेटोरिका की प्राचीन तकनीक से काफी प्रासंगिक है।[1,2,3]

गांधी का संचार और अरस्तू की बयानबाजी:

मानव संचार पर सबसे पुरानी और सबसे विस्तृत पुस्तक अरस्तू की रेटोरिका है । अरस्तू का मानना था कि बयानबाजी या संचार एक कला है और इसे संचारक द्वारा अपने दर्शकों को समझाने के लिए विकसित किया जाना चाहिए। अरस्तू ने बयानबाजी को दर्शकों को समझाने की कला के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने तीन साधनों या कारकों की पहचान की जो दर्शकों को वांछित कार्रवाई के लिए राजी कर सकते हैं: संचारक का चरित्र, उसकी तर्क की समझ, और दर्शकों में भावनाएं जगाने की उसकी क्षमता" (सीताराम **1991:92,93)**।

चरित्र

दार्शनिक रूप से कहें तो, चरित्र का निर्माण व्यक्ति के मूल्यों पर होता है। अरस्तू का कहना है कि चरित्र निश्चित रूप से एक सांस्कृतिक परिवर्तनशील है। संस्कृति व्यक्ति को नैतिक मूल्यों का एक समूह सिखाती है। नैतिक मूल्य लोगों की सांस्कृतिक विरासत है। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है और इसने लोगों के कार्यों का मार्गदर्शन किया है। एक मूल्य को "किसी व्यक्ति के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश, जो उसके कार्यों को निर्देशित करता है या दिखाता है कि उसे कौन सी दिशा लेनी चाहिए" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है **(सेमिनरी केस, 1978)**। यहां गांधी जी के सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्य प्राचीन ग्रंथों एवं तुलसीदास जैसे विद्वानों से प्राप्त हुए हैं। गांधीजी ने अपने ऊपर सबसे कठोर अनुशासन लागू किया। उनके व्यक्तित्व और उनके सुसमाचार और अहिंसा की तकनीक के नैतिक प्रभाव को किसी भी भौतिक पैमाने पर नहीं तोला जा सकता है, न ही इसका मूल्य किसी विशेष पंथ या देश तक ही सीमित है। यह संपूर्ण मानवता के लिए एक अविनाशी उपहार है।

गांधी के अनुसार, व्यक्तिगत नैतिकता और राज्य नैतिकता अविभाज्य हैं। नैतिकता को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। **1.** व्यक्तिगत नैतिकता जो व्यक्ति और परिवार से संबंधित है; **2.** राज्य की नैतिकता, जो राज्य और उसकी संस्थाओं के साथ व्यवहार करती है। व्यक्तिगत नैतिकता राज्य नैतिकता के अनुरूप गिरती और बढ़ती है और राज्य नैतिकता भी व्यक्तिगत नैतिकता के साथ बदलती रहती है। कभी-कभी ये दोनों प्रकार की नैतिकताएँ एक साथ बढ़ती और गिरती हैं। यूनानी और चीनी दार्शनिकों ने व्यक्तिगत और राज्य नैतिकता के बीच मौलिक संबंध को मान्यता दी। अरस्तू ने अपने ग्रंथ में कहा कि राज्य परिवारों और गांवों का एक संघ है, जिसका अंत

आदर्श और आत्मनिर्भर जीवन है। प्लेटो, सिसरो और कांट की तरह गांधीजी ने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता दी। वास्तव में "आधुनिक समय में महात्मा गांधी पहले नेता थे जिन्होंने सत्य और अहिंसा जैसे नैतिक मूल्यों को व्यावहारिक राजनीतिक मामलों के साथ बहुत शालीनता और सफलतापूर्वक जोड़ा। उनके लिए धर्म से रहित राजनीति राष्ट्र के लिए एक फंदे की तरह है, जो उसका गला घोंट सकती है और अंततः उसे नष्ट कर सकती है" **(गुटपा, 1998:157ए)**। गांधीजी के लिए, धर्म नैतिकता के समान है और सत्य नैतिकता का सार है।[4,5,6]

तर्क की भावना

संचार के अरस्तू मॉडल में, एक प्रभावी संचारक के पास तर्क की समझ होनी चाहिए। पत्रकारिता के उद्देश्यों को समझाते हुए गांधी जी ने तीन महत्वपूर्ण बातें कहीं और अपने समाचार पत्रों और भाषणों में भी इसका अभ्यास किया। उनमें से एक है 'लोकप्रिय राय को समझें और उसे अभिव्यक्ति दें'। बहु-सांस्कृतिक भारतीय समाज को औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन से आजादी की मांग करना एक तार्किक तथ्य है। इस कठिन कार्य तक पहुंचने के लिए, गांधी ने निष्क्रिय प्रतिरोध के रूप में सत्याग्रह को अपनाया और राम राज्य का इस्तेमाल किया, जो अंग्रेजी शब्द 'यूटोपिया' के लिए गांधी का समकक्ष है।

सत्याग्रह: यह संघर्षों को सुलझाने का गांधीजी का धर्मनिरपेक्ष तरीका है। इस संबंध में, एलएन गुप्ता ने कहा, "गांधी नेअपने गहरे धार्मिक और दार्शनिक विश्वास से सत्याग्रह को आकर्षित किया जो विशेष रूप से हिंदू नहीं था। उन्होंने न केवल भगवद-गीता और उपनिषद के प्रति अपना ऋण स्वीकार किया, बल्कि माउंट के उपदेश और टॉल्स्टॉय और थोरो के लेखन के प्रति भी अपना ऋण स्वीकार किया। कोई नास्तिक या अज्ञेयवादी हो सकता है और फिर भी सत्याग्रह का अभ्यास कर सकता है । लेकिन धार्मिक व्यक्ति के लिए उन धारणाओं को स्वीकार करना आसान होता है जिन पर सत्याग्रह आधारित है" **(1998: 157बी)**। इसीलिए वे कई बार भूख हड़ताल पर भी बैठे।

राम राज्य : कई लोगों ने 'राम राज्य' वाक्यांश का उपहास किया, जिसे गांधीजी कभी-कभी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लक्ष्य का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल करते थे। "महान संत तुलसीदास नेसरकार के राजशाही स्वरूप के संदर्भ में राम राज्य शब्द का उपयोग किया था। लेकिन, इस 'संत मुहावरे' से गांधी का तात्पर्य न्याय, समानता और शोषण से मुक्त के महान सिद्धांतों पर मजबूती से स्थापित एक आदर्श राज्य व्यवस्था से था", **(उक्त, 159)**। इसीलिए उन्होंने ऐसे कानूनों को तोड़ा जो अन्यायपूर्ण थे, विशेषकर नमक पर कर जिसे सबसे गरीब लोग भी इस्तेमाल करते हैं। गांधी राजधर्म में विश्वास नहीं रखते थे। इस संदर्भ में, फिशर **(1994ए:430)** ने अजीब विरोधाभास पर ध्यान दिया कि "जिन्ना, जो अपने युवा दिनों में एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवादी के रूप में बड़े हुए थे, और जिनकी स्पष्ट रूप से धर्म में बहुत कम रुचि थी, ने धर्म पर आधारित एक राज्य की स्थापना की, जबकि गांधी ने पूरी तरह से धार्मिक, एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना के लिए काम किया"।[7,8,9]

भावनाएँ जगाएँ : अरस्तू ने कहा कि एक प्रभावी संचारक में दर्शकों के बीच भावनाएँ जगाने की क्षमता होनी चाहिए। गाँधी जी ने पत्रकारिता के उद्देश्यों को समझाते हुए यह भी कहा था कि 'लोगों में वांछनीय भावनाएँ जगाओ और निर्भय होकर लोकप्रिय दोषों को उजागर करो।' गांधी जी ने जो कहा वही किया। **1915** में दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद उन्होंने भारत के कोने-कोने का दौरा किया। उन्होंने आम लोगों की पीड़ा को समझा और उनसे बातचीत की। उन्होंने लोगों की भावनाओं को समझा और शासकों के लोकप्रिय दोषों को मंचों और समाचार पत्रों में व्यक्त किया। गांधीजी ने दृढ़ता से कहा कि वे ये लेख केवल भारतीयों को जगाने और ब्रिटिश शासन के खिलाफ उनमें वांछित भावनाएं जगाने के लिए लिख रहे थे, साथ ही अपने प्रभावी सार्वजनिक भाषणों से अधिक संख्या में लोगों को राष्ट्रवाद से जोड़ने के लिए भी।

अरस्तू ने यह भी कहा कि यदि चरित्र और तर्क पर्याप्त मजबूत हैं, तो दर्शक भावनात्मक रूप से उत्तेजित हो जाएंगे और अंततः संचारक के प्रस्तावों को स्वीकार करने के लिए राजी हो जाएंगे। पहले दो चर संचारक-केंद्रित हैं और तीसरा श्रोता-केंद्रित है। अरस्तू का कहना है कि यदि कोई व्यक्ति संचार की कला में महारत हासिल करना चाहता है, तो उसे तार्किक रूप से तर्क करने, मानव चरित्र का विश्लेषण करने और मानवीय भावनाओं को समझने में सक्षम होना चाहिए। ये तीन कारक: चरित्र, तार्किक सोच और दर्शकों के बीच भावनाओं को जगाना, व्यावहारिक महात्मा गांधी में दिखाई देते हैं। उनके भाषणों ने बड़े पैमाने पर लोगों को वांछित कार्रवाई के लिए एक पंक्ति में इकट्ठा किया। इसके परिणामस्वरूप गांधीजी के तीन राष्ट्रीय व्यापक जन आंदोलन जैसे **1920** में असहयोग, **1930** में सविनय अवज्ञा और **1942** में भारत छोड़ो ने उन्हें जनसंचारक और राष्ट्रीय नेता बना दिया।

गांधी: एक आदर्श पत्रकार

19वीं शताब्दी के आरंभ में भारतीय प्रेस जन नेताओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती थी। अधिकांश नेता अपने मुखपत्र के रूप में और अपनी विचारधारा का प्रचार करने के लिए अपने स्वयं के समाचार पत्र चलाते थे। भारत के महान संपादकों में से एक, कोटामाराजू रामा राव ने लिखा है कि "भारतीय पत्रकारिता अपनी जीवन शक्ति, महत्व और प्रभाव को एक महान कारक के कारण मानती है - इसके महानतम पत्रकार एक मिशन वाले व्यक्ति थे, बौद्धिक रूप से अत्यधिक सुसज्जित व्यक्ति, शक्तिशाली लेखक, सक्षम विवादास्पद और महान व्यक्ति थे। सत्यनिष्ठा और साहस" **(पार्थसारथी, 1989: 86)**। ऐसे पत्रकारों में से एक थे महात्मा गांधी, जिन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समाचार पत्रों की शुरुआत की और उनका उपयोग किया। स्वतंत्रता के अहिंसक संघर्ष में राष्ट्रवादी समाचार पत्र गांधीजी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले। **40** वर्षों तक उन्होंने साप्ताहिक समाचार पत्रों का संपादन और प्रकाशन किया। वह उस समय अपने उच्च प्रसार वाले समाचार पत्रों के साथ बड़ी संख्या में भारतीयों और गैर-भारतीयों तक पहुंचे, जब जनसंचार माध्यम सीमित थे।[10,11,12]

गांधीवादी पत्रकारिता गांधी द्वारा अपने जीवनकाल में अपने प्रकाशनों जैसे इंडियन ओपिनियन, यंग इंडिया, नवजीवन **(गुजराती)** और हरिजन के माध्यम से प्रचलित और प्रचारित दर्शन और मूल्यों से उभरी। गांधीजी ने अनुनय, चर्चा और बहस के माध्यम से अपने विचारों का प्रचार करने के लिए अपने चार समाचार पत्रों का उपयोग किया। "गांधी ने **4** जून **1903** को मनसुखलाल नज़र के साथ संपादक के रूप में इंडियन ओपिनियन के साथ दक्षिण अफ्रीका में अपनी पत्रकारिता की शुरुआत की । पहले अंक में गांधी द्वारा लिखित एक

अहस्ताक्षरित संपादकीय, 'आवरसेल्व्स' प्रकाशित हुआ, जिसमें अखबार की नीति की रूपरेखा दी गई थी" (सीडब्ल्यूएमजी, **1961:580)**।

समाचार पत्र के पीछे का उद्देश्य भारतीयों को समाचारों का साप्ताहिक राउंड-अप देना और उन्हें स्वच्छता और साफ-सफाई के बारे में शिक्षित करना था। **1915** में दक्षिण अफ्रीका से लौटते ही गांधीजी ने अपना राजनीतिक जीवन शुरू कर दिया। उन्होंने अहमदाबाद से अपना मासिक नवजीवन (गुजराती) प्रकाशित करने के लिए एक प्रिंटिंग प्रेस, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस खरीदा । नवजीवन को साप्ताहिक में बदल दिया गया और गांधी ने **7** सितंबर, **1919** को इसका संपादकत्व संभाला। गांधी ने **8** अक्टूबर, **1919** को बॉम्बे के होम रूल लीगर्स, जो इसके वास्तविक संस्थापक थे, से अंग्रेजी साप्ताहिक यंग इंडिया का अधिग्रहण किया और प्रकाशन शुरू किया। हालाँकि, ब्रिटिश प्रशासन के दमनकारी कृत्यों के कारण **1932** में यंग इंडिया को बंद कर दिया गया था। "जब गांधीजी सविनय अवज्ञा आंदोलन के कारण पूना की जेल में थे, तब एक और साप्ताहिक निकालने का विचार उनके मन में चल रहा था" (भट्टाचार्य, **2002:94)**। जेल में रहते हुए भी उन्होंने हरिजन सेवक संघ की स्थापना की। संघ के अनुरोध पर, गांधीजी ने **11** फरवरी, **1933** को हरिजन (अंग्रेजी) साप्ताहिक के रूप में शुरू किया। हरिजनबंधु, हरिजनसेवक क्रमशः गुजराती और हिंदी संस्करण हैं। गांधीवादी पत्रकारिता समाचार के चार अलग-अलग मानदंडों पर जोर देती है, संस्कृति, सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी, शांति और विकास। गांधीजी ने स्पष्ट रूप से इन समाचार मूल्यों के बारे में बात नहीं की, हालांकि, उन्होंने अहिंसा (अहिंसा), आत्मनिर्भरता (स्वदेशी), स्व-शासन (स्वराज) और सत्य बल के दर्शन से प्राप्त अपने व्यक्तिगत अनुभव के कारण उन पर जोर दिया। (सत्याग्रह), विलानिलम, **2005: 80)**।

अपनी अन्य गतिविधियों के बीच भी वह अपनी पत्रिकाओं का संपादन कैसे कर पाए, यह एक चमत्कार लगता है। अधिकांश लेख, यहाँ तक कि जो उनकी आत्मकथा भी बने, दो कार्यक्रमों के बीच थोड़े अंतराल के दौरान लिखे गए थे, कुछ चलती ट्रेनों में लिखे गए थे क्योंकि पांडुलिपि को किसी विशेष स्टेशन से भेजा जाना अधिक महत्वपूर्ण था ताकि वह अहमदाबाद में हो। मुद्रण का सही समय. गांधीजी के चुनिंदा शिष्यों ने समाचार पत्रों में उनके विचार प्रकाशित करने में उनकी सहायता की। "दक्षिण अफ्रीका में, छगनलाल गांधी ने इंडियन ओपिनियन के गुजराती अनुभाग का प्रबंधन किया । अल्बर्ट वेस्ट, एक यूरोपीय पत्रकार, ने इंडियन ओपिनियन की ओर रुख किया, जिसने हेनरी पोलाक और उनकी पत्नी जैसे व्यक्तियों की आत्म-बलिदान वफादारी को आकर्षित किया। भारत में, गांधी को महादेव देसाई और प्यारेलाल जैसे सक्षम और समर्पित लोगों की आजीवन सहायता मिली" (नंदा, **2012: 2)**।[13,14,15]

गांधीवादी पत्रकारिता को चार प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है: सार्वजनिक पत्रकारिता, पत्रकारिता की नैतिकता, शांति पत्रकारिता और विकास पत्रकारिता।

गांधी की सार्वजनिक पत्रकारिता:

गांधी ने रेखांकित किया कि समाचार पत्रों का मूल उद्देश्य सार्वजनिक सेवा है। लोगों की सेवा करने में, समाचार पत्रों से ऐसी खबरें प्रसारित करने की अपेक्षा की जाती थी जो व्यक्ति को गलत कार्य से अच्छे आचरण में बदल दें। गांधी ने कहा था कि "पत्रकारिता का सच्चा कार्य जनता के दिमाग को शिक्षित करना है, न कि वांछित और अवांछित छापों को जमा करना"। द हिंदू की अपनी यात्रा के दौरान महात्मा गांधी का भाषण पत्रकारिता के बारे में उनके दर्शन और दृष्टिकोण का सार प्रस्तुत करता है: "इसलिए, मैं पत्रकारों की सनक को दोहराते हुए कभी नहीं थका हूं। मैं जानता हूं कि पत्रकारिता को कभी भी स्वार्थी उद्देश्यों के लिए या केवल आजीविका कमाने के लिए या इससे भी बदतर, पैसा इकट्ठा करने के लिए वेश्यावृत्ति नहीं करनी चाहिए। पत्रकारिता, देश के लिए उपयोगी और सेवा योग्य होने के लिए, देश की सेवा के लिए अपना निश्चित, अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेगी और चाहे कुछ भी हो, परिणामों की परवाह किए बिना देश के विचारों को ध्यान में रखेगी (गुप्ता, **2012)**।

जब कुछ इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया, जो निजी क्षेत्र में हैं, पारिवारिक व्यवसाय और पार्टी के पर्चे बन गए, ट्रस्टीशिप की गांधीवादी अवधारणा ने वर्तमान समाज के लिए सार्थक प्रासंगिकता हासिल कर ली है। उन्होंने बड़े व्यवसायों को 'लोगों की संपत्ति' पर भरोसा करने वाला बताया और इस प्रकार बड़े सामाजिक उद्देश्य पर जोर दिया कि औद्योगिक संपत्ति को स्वतंत्र भारत में जनता की सेवा करनी चाहिए। गांधी ने टिप्पणी की: "एक ट्रस्टी का जनता के अलावा कोई उत्तराधिकारी नहीं होता" (यंग इंडिया, **15** नवंबर **1928)**। ट्रस्टीशिप का सिद्धांत धन के न्यायसंगत वितरण के साथ-साथ अहिंसक समाजवादी सुधार पर लागू होता है, जो व्यावहारिक है क्योंकि इसमें सभी को एक ही बार में इसे अपनाने की आवश्यकता नहीं होती है। गांधीजी ने सर्वोदय, सामाजिक व्यवस्था की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया, जिसमें 'प्रत्येक के लिए और सभी के लिए' के आदर्श को कायम रखा गया।

गांधीवादी सार्वजनिक पत्रकारिता आर्थिक समानता से संबंधित है, जो अहिंसक स्वतंत्रता की मुख्य कुंजी है। गांधी का मानना है कि आर्थिक समानता के लिए काम करने का मतलब पूंजी और श्रम के बीच शाश्वत संघर्ष को खत्म करना है। इसका मतलब है कि एक ओर उन चंद अमीरों का स्तर नीचे गिराना जिनके हाथों में देश की अधिकांश संपत्ति केंद्रित है, और दूसरी ओर अर्द्ध-भूखे लाखों नग्न लोगों का स्तर बढ़ाना। गांधी जी ने अपने 'रचनात्मक कार्यक्रम' में धन के समान वितरण को तेरह वस्तुओं में से एक बताया। संक्षेप में, समान वितरण का वास्तविक निहितार्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के पास अपनी आवश्यक और प्राकृतिक जरूरतों को पूरा करने के साधन होने चाहिए।[16,17,18]

1927 में, गांधी ने समझाया कि, "मैं मानवता की सेवा के माध्यम से ईश्वर को देखने का प्रयास कर रहा हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि ईश्वर न तो स्वर्ग में है, न ही नीचे, बल्कि हर किसी में है..."। कई अवसरों पर,

गांधीजी ने व्यक्ति के नैतिक आचरण पर लिखा और उनका मानना था कि आध्यात्मिक रूप से एकीकृत व्यक्ति अब जुनून का गुलाम नहीं है, बल्कि सच्चे आत्म-ज्ञान के प्रकाश में अपने दैनिक मामलों को करने में सक्षम है (परेल, 2002: 16).

पत्रकारिता में नैतिकता

पत्रकारिता में नैतिकता का अभ्यास एक मुख्य कारक था जिसने एक सामान्य मोहनदास करमचंद गांधी को महात्मा गांधी में बदल दिया। गांधीजी के लगभग सभी लेखों का उद्देश्य व्यक्ति में नैतिक आचरण को सुदृढ़ करते हुए उसका नैतिक परिवर्तन करना था। उन्होंने कभी भी जीवन को विभाजित करने में विश्वास नहीं किया। उन्होंने अध्यात्मवाद और नैतिक मूल्यों पर आधारित जीवन के समग्र दृष्टिकोण की वकालत की। पेशे में नैतिकता दिशानिर्देश के रूप में कार्य करती है, जो सूचना प्रसार की प्रक्रिया में आवश्यक है। ये नैतिकता भाषा के उपयोग और जनता के सामने तथ्यों को प्रस्तुत करने में वस्तुनिष्ठता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए जानकारी हासिल करने में अपनाए गए साधनों से संबंधित है। सूचना के संग्रहण और प्रसार की प्रक्रिया में, प्रेस विभिन्न साधन अपनाता है और कभी-कभी बाहरी कारणों से जनता से समाचारों को दबा देता है। गांधी ने कहा: "प्रेस को चौथा स्तंभ कहा जाता है। यह निश्चित रूप से एक शक्ति है लेकिन उस शक्ति का दुरुपयोग करना आपराधिक है। मैं खुद एक पत्रकार हूं और पत्रकारों से अपील करूंगा कि वे अपनी जिम्मेदारी का एहसास करें और सच्चाई को कायम रखने के अलावा किसी अन्य विचार के साथ अपना काम जारी रखें" (हरिजन, 27 अप्रैल 1947)।

गांधीजी विज्ञापनों को 'व्यावसायिक भाषण' के रूप में प्रकाशित करने के ख़िलाफ़ थे क्योंकि अमेरिकी अदालतों ने इसे संपादकीय सामग्री के ख़िलाफ़ माना था। उन्होंने यंग इंडिया (जनवरी 9, 1930) में लिखा था कि "यह दुख की बात है कि भारत जैसे देश में, जहां शराब को लगभग सार्वभौमिक रूप से बुरा माना जाता है, बिक्री के लिए विज्ञापन लेने के लिए पर्याप्त सम्मानजनक समाचार पत्र पाए जाते हैं।" जबकि उनके संपादकीय कॉलम पूर्ण शराबबंदी का समर्थन करते हैं" (नेशनल मीडिया सेंटर, 1997: 314)।

गांधी ने यंग इंडिया (1926 मार्च 25) में विज्ञापन की सामग्री पर टिप्पणी की थी कि "मैं मानता हूं कि अनैतिक विज्ञापनों की सहायता से समाचार पत्र संचालित करना गलत है। मेरा मानना है कि यदि विज्ञापन लिया ही जाना चाहिए, तो अखबार मालिकों और संपादकों द्वारा स्वयं एक कठोर सेंसरशिप स्थापित की जानी चाहिए और केवल स्वस्थ विज्ञापन ही लिया जाना चाहिए" (देसाई, 1988:76)। उन्होंने हरिजन (24 अगस्त 1935) में विज्ञापन में सच्चाई के प्रति अत्यधिक सावधानी बरतने की अपील करते हुए कहा कि: "मेरी दलील विज्ञापन में सच्चाई के प्रति उचित सम्मान के लिए है। विशेषकर भारत में लोगों की यह आदत है कि वे किसी किताब या अखबार में छपे शब्द को ईश्वरीय सत्य मानते हैं। इसलिए विज्ञापन तैयार करते समय अत्यधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है" (सीडब्ल्यूएमजी, 1975: 357)।[19,20,21]

गांधीजी का मानना था कि पत्रकारिता जीविकोपार्जन का व्यवसाय नहीं होना चाहिए। यह जनता की सेवा का एक साधन होना चाहिए, एक बड़े लक्ष्य के लिए सहायता होना चाहिए। नव भारत टाइम्स के पूर्व रेजिडेंट संपादक त्रिखा (1998) का कहना है कि "उन्हें (गांधी) प्रेस से अपेक्षा थी कि वह केवल सूचना प्रसारित करने और अच्छे विचारों के प्रचार-प्रसार की भूमिका तथा नैतिक और नैतिक आचरण की आवश्यकता पर टिप्पणी करने से कहीं अधिक उच्च भूमिका निभाए।" प्रत्येक व्यक्ति और समग्र रूप से समाज द्वारा" (पृ.119)।

शांति पत्रकारिता

गांधी शांति, सत्य और अहिंसा के प्रतीक रहे हैं। शांति पत्रकारिता का दर्शन हिंसा और युद्ध को रोकना है। शांति पत्रकारिता स्वयं को सामाजिक रूप से जिम्मेदार पत्रकारिता के रूप में पहचानती है और संघर्षों को हल करने के लिए घटनाओं की व्याख्या करती है। शांति पत्रकारिता को "एक कार्यक्रम या पत्रकारीय समाचार कवरेज का एक ढाँचा" के रूप में परिभाषित किया गया है जो संघर्षों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए क्रमशः शांति बनाने और बनाए रखने की प्रक्रिया में योगदान देता है" (हनिट्ज़, 2004: 483-495)। जोहान गाल्टुंग द्वारा यह शब्द गढ़े जाने से पहले भी गांधी ने शांति पत्रकारिता का अभ्यास किया था। "नॉर्वेजियन विद्वान जोहान गाल्टुंग ने पहली बार 1970 के दशक में शांति पत्रकारिता को युद्ध और संघर्षों को कवर करने वाले पत्रकारों की एक आत्म-जागरूक, कामकाजी अवधारणा के रूप में प्रस्तावित किया था" (मैक गोल्ड्रिक और लिंच, 2000: 26)।

गांधीजी ने हिंदू-मुस्लिम एकता के संकट को हल करने के लिए अहिंसक तरीकों का इस्तेमाल किया। अहिंसा के बारे में लिखते हुए, गांधी ने एक लेख, 'तलवार का सिद्धांत' में इस दर्शन को व्यक्त किया, "मैं कोई दूरदर्शी नहीं हूं। मैं एक व्यावहारिक आदर्शवादी होने का दावा करता हूं। अहिंसा का धर्म केवल ऋषि -मुनियों के लिए नहीं है। यह आम लोगों के लिए है. अहिंसा हमारी प्रजाति का कानून है, जैसे हिंसा जानवरों का कानून है। अपनी गतिशील स्थिति में अहिंसा का अर्थ सचेतन कष्ट है। इसका मतलब दुष्ट की इच्छा के प्रति नम्र समर्पण नहीं है, बल्कि अत्याचारी की इच्छा के विरुद्ध अपनी पूरी आत्मा को समर्पित करना है" (यंग इंडिया, 11 अगस्त 1920)।

आत्मविश्वास के साथ अहिंसा का अभ्यास करने की सलाह देते हुए गांधी ने कहा: "मैं 50 वर्षों से अधिक समय से वैज्ञानिक परिशुद्धता के साथ अहिंसा और इसकी संभावनाओं का अभ्यास कर रहा हूं। मैंने इसे जीवन के हर क्षेत्र में लागू किया है, घरेलू, संस्थागत, आर्थिक और राजनीतिक। मैं ऐसे एक भी मामले को नहीं जानता हूं जिसमें यह विफल रहा हो" (हरिजन, 6 जुलाई 1940)। यदि अहिंसा और सत्य मौलिक सिद्धांत थे, तो गांधी ने सत्याग्रह शुरू करके इन अवधारणाओं को वस्तुनिष्ठ बना दिया। यह सामाजिक परिवर्तन की एक नई तकनीक है। गांधीजी के लिए, सत्याग्रह का अर्थ जीवन का विज्ञान और कला था। वह सत्याग्रह की पहचान 'सत्य बल' या 'आत्मिक बल' से करते हैं। यह सत्य की पुष्टि है, प्रतिद्वंद्वी को पीड़ा पहुंचाकर नहीं, बल्कि स्वयं के द्वारा। गांधी ने कहा: "अहिंसा एक ऐसी शक्ति है जिसका

प्रयोग सभी - बच्चे, युवा पुरुष और महिलाएं या वयस्क - द्वारा समान रूप से किया जा सकता है, बशर्ते उन्हें प्रेम के ईश्वर में जीवंत विश्वास हो और इसलिए, सभी के लिए समान प्रेम हो।" मानवता। जब अहिंसा को जीवन के नियम के रूप में स्वीकार किया जाता है, तो इसे संपूर्ण अस्तित्व में व्याप्त होना चाहिए और अलग-अलग कृत्यों पर लागू नहीं किया जाना चाहिए" **(**हरिजन, **5** सितंबर **1936)**।

विकास पत्रकारिता

विकास पत्रकारिता का उद्देश्य अधिकांश लोगों के जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय परिवर्तन लाने के लिए विकास की प्रक्रियाओं को तेज करना है। इसमें सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक घटनाओं के संपूर्ण पहलू को शामिल किया गया है। भारत में महात्मा गांधी ने विकास पत्रकारिता शब्द से पहले ही विकास रिपोर्टिंग का अभ्यास किया था, विकास पत्रकारिता शब्द **1967** में एलन चॉकले द्वारा गढ़ा गया था।

एक विकास पत्रकार के रूप में, गांधीजी को लगा कि अखबार की भूमिका जनता को शिक्षित करना है। "गांधी ने अस्पृश्यता निवारण, निषेध, खादी और अन्य ग्राम उद्योगों को बढ़ावा देने और भारत में अर्ध-भूखे और बेरोजगार ग्रामीण किसानों की आय के पूरक के साधन के रूप में चरखा को लोकप्रिय बनाने जैसे समसामयिक विषयों पर प्रचुर मात्रा में लिखा" **(**कृष्णा**)** मूर्ति, **1966: 79-80)**।

गांधी जी ने अस्पृश्यता के उस दाग को मिटाने का प्रयास किया, जो हिंदू समाज में श्रेणीबद्ध असमानता को जन्म देता था और विकास को ठप्प करने का मूल कारण था। गांधी ने लिखा: "आज हिंदू धर्म में छुआछूत का चलन है, मेरी राय में यह भगवान और मनुष्य के खिलाफ एक पाप है और इसलिए, यह एक जहर की तरह है जो धीरे-धीरे हिंदू धर्म के जीवन को खा रहा है" **(**हरिजन, **27** मार्च **1939)**।

गांधी का यह भी मानना है कि भारत की मुक्ति उसकी महिलाओं के बलिदान और ज्ञानोदय पर निर्भर करती है। सेवा के अपने लंबे जीवन के दौरान, गांधी ने कानून, परंपरा और यहां तक कि धर्म के नाम पर महिलाओं के साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ जोरदार प्रचार किया। गांधी ने महिलाओं को अपमानित करने के लिए पुरुषों को फटकार लगाई। उन्होंने कहा, "महिला को कमजोर लिंग कहना अपमानजनक है। यह पुरुष का स्त्री के प्रति अन्याय है। यदि शक्ति से तात्पर्य पाशविक शक्ति से है, तो क्या स्त्री वास्तव में पुरुष से कम पाशविक है? यदि शक्ति से तात्पर्य नैतिक शक्ति से है, तो स्त्री पुरुष से अत्यधिक श्रेष्ठ है... यदि अहिंसा हमारे अस्तित्व का नियम है, तो भविष्य महिला के पास है" **(**हरिजन, **10** अप्रैल **1930)**। गांधीजी ने महिलाओं को सलाह दी कि वे सुरक्षा के लिए पुरुषों की तलाश न करें। उन्हें अपनी ताकत, चरित्र की पवित्रता और भगवान पर भरोसा करना चाहिए।" गांधी ने लिखा: "भारतीय महिलाओं को गर्भनिरोधक लेने के लिए कहना कम से कम घोड़े के आगे गाड़ी लगाने जैसा है। पहली चीज़ है उसे मानसिक गुलामी से मुक्त करना, उसे अपने शरीर की पवित्रता सिखाना और उसे राष्ट्रीय सेवा और मानवता की सेवा की गरिमा सिखाना।" **(**हरिजन, **2** मई **1936)**।

गांधी ने अपनी पत्रिका हरिजन में एक लेख में सार्वजनिक स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए प्राकृतिक उपचार की वकालत की। उन्होंने लिखा: "प्राकृतिक उपचार में दो भाग होते हैं। पहला, भगवान या रामायण का नाम लेकर बीमारियों को ठीक करना, और दूसरा, सही और स्वच्छ जीवन शैली को अपनाकर बीमारी को रोकना। गांव से आई रिपोर्ट में कहा गया है कि गांव को साफ-सुथरा रखने में वहां के निवासी भी उनका सहयोग कर रहे हैं। मेरा मानना है कि जहां व्यक्तिगत, घरेलू और सार्वजनिक स्वच्छता के नियमों का कड़ाई से पालन किया जाता है और आहार और व्यायाम के मामले में उचित देखभाल की जाती है, वहां बीमारी या बीमारी का कोई अवसर नहीं होना चाहिए। प्राकृतिक उपचार का तात्पर्य जीवन की एक आदर्श पद्धति है और इसके बदले में शहरों और गांवों में आदर्श जीवन स्थितियों की परिकल्पना की गई है" **(**हरिजन, **25** मई **1946)**। गांधीजी ने भोजन के बारे में भी निर्देश दिये। हरिजन में 'हरी पत्तियाँ और उनका खाद्य मूल्य' शीर्षक लेख में उन्होंने कहा: "दूध और केला एक उत्तम भोजन है। लगभग पाँच महीनों से मैं बिना पका हुआ खाना खाकर जी रहा हूँ। अपने भोजन में हरी पत्तियों को शामिल करने से ग्रामीण कई बीमारियों से बच सकेंगे, जिनसे वे अब पीड़ित हैं" **(**हरिजन, **15** फरवरी **1935)**। भाषा के विकास पर, नटराजन **(2000)** ने कहा: "उनकी स्पष्ट और सरल शैली, निर्देशात्मक और सभी उत्कर्षों से मुक्त, ने गुजराती को अभिव्यक्ति की ताकत और जीवंतता दी जो भाषा के विकास में एक मूल्यवान योगदान था" **(**पृष्ठ **183)**।

गांधीवादी पत्रकारिता में, ग्रामीण विकास को इस तथ्य के मद्देनजर महत्व दिया गया था कि गांधी ग्रामीण विकास के इच्छुक थे जो राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। गांधी ने **26** जुलाई, **1942** के हरिजन में आदर्श भारतीय गांव का वर्णन किया : "यह एक पूर्ण गणराज्य है, जो अपनी महत्वपूर्ण जरूरतों के लिए अपने पड़ोसियों से स्वतंत्र है, और फिर भी कई अन्य जरूरतों के लिए अन्योन्याश्रित है जिसमें निर्भरता एक आवश्यकता है। इस प्रकार प्रत्येक गाँव की पहली चिंता अपनी खाद्य फसलें और कपड़े के लिए कपास उगाना होगी। इसमें अपने मवेशियों के लिए आरक्षित स्थान, वयस्कों और बच्चों के लिए मनोरंजन और खेल का मैदान होना चाहिए। फिर यदि अधिक भूमि उपलब्ध है, तो यह तम्बाकू, अफ़ीम और इसी तरह की चीज़ों को छोड़कर, उपयोगी धन फ़सलें उगाएगा। गाँव में एक ग्रामीण थिएटर, स्कूल और सार्वजनिक हॉल का रखरखाव किया जाएगा। स्वच्छ आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए इसका अपना जल कार्य होगा। यह नियंत्रित कुओं और टैंकों के माध्यम से किया जा सकता है। अंतिम बुनियादी पाठ्यक्रम तक शिक्षा अनिवार्य होगी। जहां तक संभव हो, प्रत्येक गतिविधि सहयोगात्मक आधार पर संचालित की जाएगी" **(**फिशर, **1994** में उद्धृत: **407)**।

महात्मा गांधी ने अपने मजबूत चरित्र, उचित और तार्किक सोच और लोगों के बीच भावनाओं और वांछनीय भावनाओं को जगाने की क्षमता से खुद को एक जन संचारक के रूप में साबित किया। गांधीजी पत्रकारिता को अपनी गतिविधियों का उप-उत्पाद मानते थे और समाचार पत्र उनके लिए अपने विचारों का प्रचार करने का माध्यम

था। महात्मा गांधी ने अपने समाचार पत्रों का उपयोग जनसंचार के माध्यम और मुखपत्र के रूप में किया था।

दुर्भाग्य से, महात्मा गांधी द्वारा रखी गई भारतीय प्रेस की नींव वर्तमान दौर में मीडिया द्वारा पत्रकारिता के पश्चिमी मॉडल को धीमी गति से अपनाने, टैब्लॉइडाइजेशन, जो सनसनीखेज, सेक्स और आश्चर्य पर जोर देती है, पृष्ठभूमि में सिमटती जा रही है। समाचार रिपोर्टें पक्षपातपूर्ण हैं और समाचार पत्रों में पत्रकारों की व्यक्तिगत भागीदारी काफी स्पष्ट है। विलानिलम **(2005: 89)** ने कहा कि "भारत में सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता से प्रेरित, महान लक्ष्य वाले पत्रकारों की गांधीवादी युग की पुरानी पत्रकारिता गायब हो गई है। समाज की सेवा के रूप में पत्रकारिता का स्थान मीडिया प्रमोटरों और मीडिया कर्मियों के लिए लाभ और समृद्धि पर केंद्रित पत्रकारिता ने ले लिया है।" मूर्ति **(2001:57)** ने भी अपने अध्ययन में देखा और कहा कि "सार्वजनिक जीवन और विकास में ईमानदारी का स्थान क्रमशः अपराध और राजनीतिक समाचारों ने ले लिया है। समाचार-पत्र सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी से संबंधित समाचारों के स्थान पर हत्या, आत्महत्या, चोरी आदि अपराध संबंधी समाचारों को प्राथमिकता देते हैं। अपराध की ख़बरें राजनीति के बाद दूसरे स्थान पर हैं"।

मूर्ति **(2010)** ने कहा, "पत्रकारिता के संबंध में उनके **(**गांधी**)** समाचार मूल्य अत्यधिक प्रासंगिक हैं। समाचार पत्रों और समाचार चैनलों के प्रसार के मद्देनजर समाचार मूल्य के रूप में संस्कृति आज भी प्रासंगिक हो सकती है। विदेशी चैनलों द्वारा समाचारों या घटनाओं की निरंतर आपूर्ति से किसी देश की संस्कृति पर प्रभाव पड़ता है और अंतर्राष्ट्रीय संचार के क्षेत्र में इसे सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के रूप में वर्णित किया जाता है" **(**पृष्ठ **24-29)**। जैसा कि गांधी द्वारा परिभाषित किया गया है, अहिंसा शक्ति और कौशल होने के बावजूद खुद को हिंसा से अलग करने का एक सचेत प्रयास है, समाचार मूल्य के रूप में जोहान गाल्टुंग **(2006)** द्वारा सुझाई गई शांति पत्रकारिता का उद्भव **21** वीं सदी की शुरुआत में तेजी से प्रासंगिक हो रहा है। **[22,23,24]**

नैतिकता के संबंध में गांधीवादी पत्रकारिता को बारीकी से देखने की जरूरत है क्योंकि इसकी आज भी काफी प्रासंगिकता है। पिछले भारतीय चुनावों में, कुछ भाषाई पत्रों ने अलग-अलग प्रकार की कहानियाँ प्रकाशित कीं, जिन्हें न तो समाचार माना गया और न ही विज्ञापन। पी. साईनाथ ने बताया कि "यदि यह समाचार था, तो हमने जो रिपोर्ट संकलित की है, उसे अब तक के सबसे उल्लेखनीय समाचार निर्णयों में शुमार किया जाना चाहिए। यदि यह विज्ञापन था, तो इसे स्पष्ट रूप से इस रूप में चिह्नित क्यों नहीं किया गया? यदि यह विज्ञापन नहीं था, तो यह 'पेड न्यूज' था, यह शब्द अब मीडिया शब्दकोष में मजबूती से शामिल हो गया है" **(**द हिंदू, **30** नवंबर **2009)**। ऐसा लगता है कि जिसे अब 'पैकेज पत्रकारिता' या 'कवरेज पैकेज' कहा जाता है, उससे राजनेताओं को काफी फायदा हुआ है। गांधी काफी समसामयिक दिखते हैं, क्योंकि विज्ञापन के बारे में उन्होंने जो मुद्दे उठाए हैं उनमें से अधिकांश अभी भी प्रासंगिक हैं और कानूनी या स्व-नियमन का हिस्सा हैं।

गांधीजी संभवतः सर्वकालिक महानतम और आदर्श पत्रकार हैं क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जन आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए बुद्धिमानी से कलम का इस्तेमाल किया था। उन्होंने कहा कि मेरे समाचार पत्र मेरे लिए आत्म-संयम का प्रशिक्षण स्थल और मानव प्रकृति के सभी रंगों और विविधताओं का अध्ययन करने का साधन बन गए। समाचार पत्रों के बिना सत्याग्रह जैसा आंदोलन संभव नहीं हो सकता था।

अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक पत्रिका द टाइम ने **20**वीं सदी की व्यापक ताकतों और महान घटनाओं का विवरण देते हुए गांधी को सबसे महान कार्यकर्ताओं में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया। उन्होंने सत्ता के पारंपरिक गलियारों के बाहर से परिवर्तन के लिए लड़ाई लड़ी, जो एक अमूर्त दृष्टि से बंधा हुआ था जिसके लिए उन्हें कोई भी कीमत चुकानी पड़ेगी। जो दुनिया कुछ लोगों का सम्मान करती थी उसने गांधी का सम्मान किया था। उनके संदेश की शक्ति आने वाले समय में भी मनुष्यों और राष्ट्रों को प्रेरित करती रहेगी।

विचार-विमर्श

पत्र-पत्रिकाएं किसी भी युग की ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धर्मिक घटनाओं को न केवल स्वयं अपने में संजोए हुए रहती हैं, बल्कि उनका एक विशिष्ट ढंग से मूल्यांकन और विश्लेषण भी करती हैं। पत्र-पत्रिकाएं समाज का एक ऐसा दर्पण हैं जिनसे समाज का प्रतिबिंब स्पष्ट एवं मुखर होकर स्वयं ही बोलने लगता है।

यद्यपि महात्मा गांधी के भारतीय राजनीति में आगमन से पूर्व भारतीय राजनीति में हिंदी पत्रकारिता स्वतंत्रता आंदोलन के इस महासमर में एक अत्यंत प्रभावकारी अश्त्र के रूप में कार्यरत थी। परन्तु महात्मा गांधी के पदार्पण के साथ ही हिंदी-पत्रकारिता जगत में नव-चेतना एवं उत्साह का संचार हुआ। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि उनका सानिध्य व आशीर्वाद पाकर पत्रकारिता जगत पुलकित तथा रोमांचित होकर अब अपनी निर्भीक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने लगा था। अधिकांश हिंदी समाचार पत्र-पत्रिकाओं के संपादक एवं स्वामियों का संबंध कांग्रेस के राजनीतिक दल के रूप में नहीं वरन एक ऐसे रूप में था, जिनके नैतिक मूल्य तथा राजनैतिक आकांक्षाएं लगभग एक समान थीं। गांधी जी के द्वारा प्रतिपादित नैतिक मूल्यों जैसे, 'सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, उपवास, सर्वोदय आदि का तत्कानील समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचारों, संपादकीय तथा लेखों की अभिव्यक्ति के आधार पर विश्लेषणात्मक वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इनके विश्लेषण में कुछ आलोचनाएं भी प्रतिमुखी हैं। क्योंकि आलोचक सिद्धांतो के आधर पर व्यवहार को निश्चित करते हैं। वहीं गांधी जी ने व्यवहार के आधार पर सिद्धांतो को नियत किया है।

समाचार पत्र-पत्रिकाओं में महात्मा गांधी के कार्य-कलापों के साथ-साथ अपने धुन की छवि का प्रतिबिंब स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। स्वतंत्रता संग्राम के इस महायज्ञ में समर्पित व समर्थित अनेक पत्र-पत्रिकाओं के समर्थन के बावजूद भी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में हिंदी पत्रकारिता का अमूल्य योगदान स्वर्णाक्षरों में अंकित है। स्वाधीनता की संघर्ष चेतना को लोकाचित में व्यापक स्तर तक

अपनी संपूर्ण विचार-भूमिका के साथ पहुंचाने का कार्य हिंदी पत्रकारिता ने बहुत ही सशक्त ढंग से किया। यह कार्य राष्ट्रहित के लिए समर्पित निडर एवं निर्भीक पत्रकारों के अथक प्रयत्नों का परिणाम था। जो जनजागरण के स्वर को व्यापक स्तर पर प्रस्फुटित करने वाली शक्ति रूपा, एक अमोघ अस्त्र के रूप में प्रतिष्ठित हुई। अकबर इलाहाबादी ने लेखनी योजनाओं के लिए यह पंक्ति कही है-

'खींचो न कमानों को न तलवार निकालो,
जब तोप मुकाबिल हो तो अख़बार निकालो।'

इसी श्रृंखला में महात्मा गांधी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के निर्णायक सोपान की एक महत्वपूर्ण कड़ी बने और उन्होंने अपने विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम पत्रकारिता को बनाया। किंतु पत्रकारिता जगत में उनका पदार्पण इतना अकस्मात था जिसे महज एक संयोग कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा। वे 1904 ई. में एक निर्भीक पत्रकार के रूप में सक्रिय पत्रकारिता से जुड़े। लेकिन पत्रकारिता जगत में उनके प्रवेश की पृष्ठभूमि लंदन से जुड़ी थी। इस संबंध में श्री कृष्ण देव व्यास ने लिखा- 'गांधी जी ने 18 सितंबर सन् 1888 ई. को लंदन में सर्वप्रथम एक समाचार-पत्र का अवलोकन किया था, जबकि इससे पूर्व उन्होंने भारत में कोई समाचार-पत्र नहीं पढ़ा था। बस फिर क्या था उनके विचार मंथन की श्रृंखला अनवरत रूप से चलती रही।

उनकी जाग्रत लेखन शक्ति की अभिव्यक्ति का माध्यम सर्वप्रथम लंदन स्थित 'लंदन वेजिटेरियन सोसाईटी का मुखपत्र 'वेजिटेरियन' बना।' उक्त पत्र में गांधी जी के शाकाहार संबंधी अनेक लेख प्रकाशित हुए। धीरे-धीरे उनका अन्य पत्र-पत्रिकाओं के प्रति आकर्षण बढ़ा। तत्पश्चात वे दादाभाई नौरोजी के संपर्क में आए। दादाभाई नौरोजी ने जब सन् 1890 ई में लंदन से 'इंडिया' नामक अंग्रेजी पत्र प्रकाशित किया तो उन्होंने गांधी को जोहांसवर्ग, डरबन और दक्षिण अफ्रीका में अपने समाचार पत्र का प्रतिनिध नियुक्त किया। इसी तारतम्य में उनके विचार, जो बोवर युद्व से संबंध्ति थे, सन् 1899 ई. में 'टाइम्स आफ इंडिया' में प्रकाशित हुए थे। लेकिन उन्हें सही अर्थों में एक पत्रकार के रूप में प्रतिष्ठित करने का सौभाग्य दक्षिण अफ्रीका के साप्ताहिक-पत्र 'इंडियन ओपिनियन' को जाता है।

साप्ताहिक पत्र इंडियन ओपीनियनः दक्षिण अफ्रीका में प्रथम छापाखाना स्थापित करने का श्रेय बंबई के एक स्कूल मास्टर श्री मदन जीत व्यवहारिक को जाता है। उन्होंने डरबन में सन् 1860 ई. में न केवल 'इंटरनेशनल प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की बल्कि लगभग 14 वर्ष बाद 4 जून 1903 ई. को गांधी जी एवं मनसुख लाल की संपत्ति से 'इंडियन ओपिनियन' नामक साप्ताहिक की ज्योति प्रज्ज्वलित की थी। प्रारंभ में उक्त पत्र श्री मनसुखलाल के संपादकत्व में अंग्रेजी, हिंदी, तमिल व गुजराती में छपता था। किंतु ग्राहकों की संख्या में कमी होने के कारण निरंतर घाटे की ओर बढ़ रहा था। परिणाम स्वरुप प्रथम वर्ष में ही तीस हजार रुपए का घाटा होने के कारण उनके साझीदारों के पांव उखड़ गए।

अतः पत्र संचालन में उन्होंने असमर्थता दर्शायी। इस विषम स्थिति से निपटने के लिए गांधी ने पत्र संचालन का उत्तरदायित्व अपने एक मित्र अल्बर्ट वेस्ट को सौंप दिया। लेकिन कुछ समय पश्चात् अल्बर्ट महोदय ने भी पत्र संचालन में अपनी असमर्थता जतायी। क्योंकि समाचार पत्र की आर्थिक दशा को उन्होंने भी दयनीय स्थिति में पाया था। उक्त समस्या के निवारण हेतु गांधी जी रोगाट पहुंचे। उनके मन-मश्तिष्क में पत्र से संबंध्ति भिन्न-भिन्न विचार उठ रहे थे। लेकिन उन्हें उचित लगा कि न्याय एवं समानता के संघर्ष में 'इंडियन ओपिनियन' एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसलिए उन्होंने पत्र के संचालन का वीणा खुद उठाया। पत्र के प्रथम वर्ष में उन्होंने दो हजार पौंड खर्च किए। धीरे-धीरे पत्र की आर्थिक स्थिति सुधरने लगी और वह जम गया। अब गांधी जी के संपादकत्व में यह पत्र निकलने लगा।

'इंडियन ओपिनियन' में जहां भारतीय संस्कृति, धर्म और नैतिकता के उच्च आदर्शों से परिपूर्ण स्वरों की झंकार गुंजायमान थी, वहीं समय पर टालस्टाय, थ्योरो एवं रस्किन की विचारधराओं का परिचय मिलता था। रूस-जापान में विजयी जापान के संदर्भ में गांधी जी ने सन् 1905-1907 ई. के अंकों में उनके लेख जापानियों के शौर्य, आत्म सम्मान, उनके साहस से प्रभावित होकर लिखे थे। इसी प्रकार व्यक्तिगत और सामूहिक वीरता पर भी उन्होंने बहुत कुछ लिखा था। 'इंडिनयन ओपिनियन' पत्र के माध्यम से उन्होंने जन-जागरण का महामंत्र 'सत्याग्रह' चलाया, जो आगे चलकर दिव्य-अस्त्र साबित हुआ। सत्याग्रह आंदोलन के चलते 'इंडियन ओपिनियन' मुखपत्र बनकर उभरा था। इस साप्ताहिक पत्र के माध्यम से सत्याग्रह आंदोलन की प्रमुख घटनाओं, उसमें शामिल स्त्री-पुरुषों की बलिदान गाथाओं एवं उनके अजेय नेता के व्यक्तित्व और जीवन-सिद्धांतों का केवल भारत को ही नहीं संसार का परिचय मिलता था।

सत्य के विरुद्ध कोई कुछ कहे, यह बात उन्हें सहन नहीं थी। जब लार्ड कर्जन ने एक बार किसी प्रसंगवश सत्य के विरुद्ध कुछ आपत्तिजनक टीका-टिप्पणी की, तब गांधी जी सत्य की ढाल बनकर खड़े हो गए और उन्होंने 'इंडियन ओपिनियन' के माध्यम से सशक्त ढंग से लार्ड कर्जन के मतों का खंडन किया था। इसी प्रकार भारत आने के पश्चात् अपने पुत्रा मणिलाल गांधी को लिखा था- 'इंडियन ओपिनियन में जो कुछ लिखो वह सत्य होना चाहिए। यदि इसमें कभी तुमसे कोई भूल हो जाय तो उसे कबूल करने में झिझकना नहीं।' इस दृष्टि से अगर आज की पत्रकारिता को देखा जाय तो वह खुद पर स्वयं ही सवाल खड़ा करने लगी है।

सत्याग्रह समाचारः गांधी के संपादकत्व में 7 अगस्त 1916 ई. को बंबई से 'सत्याग्रही' नामक साप्ताहिक समाचार-पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ। उक्त साप्ताहिक पत्र समाचार पत्र संबंधी अधिनियम के अंतर्गत रजिस्टर्ड नहीं था। इस संबंध् में गांधी जी का विचार था कि 'सत्याग्रही अपनी विचारधारा को केवल ऐसे ही गैर रजिस्ट्रीशुदा पत्रों के माध्यम से स्पष्ट रूप से प्रकट कर सकते थे। क्योंकि ऐसे ही पत्र एक शक्तिशाली शस्त्र का काम देते हैं।' यह पत्र सविनय अवज्ञा के हथियार के रूप में था। इसके प्रथम अंक में प्रकाशित चेतावनी द्रष्टव्य हैः 'जब तक 'रौलट ऐक्ट' वापस नहीं लिया जाएगा, तब तक इसका प्रकाशन यथावत चलता रहेगा।' उक्त साप्ताहिक का मूल्य एक आना था, जो प्रत्येक

सोमवार को प्रकाशित होता था। इस हस्तलिखित पत्र का कार्य सत्याग्रह आंदोलन संबंधी गांधी जी के विचारों एवं संदेशों को जनता तक पहुंचाना होता था। यह कार्य देश भक्तों द्वारा गुप्त रूप से नहीं किया जाता था। इसलिए इस पत्र की प्रतियां या तो बंट जाती थीं या जब्त कर ली जाती थीं।[18,19]

इसी तारतम्य में जन-क्षोभ दृढ़ता के साथ प्रतिबिंबित करने के लिए अनेक पत्र अपनी संपूर्ण शक्ति को समाहित कर राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने के लिए आगे आए। उनमें गांधी जी के असहयोग आंदोलन को व्यापक बनाने के उद्देश्य से कृष्णगोपाल शर्मा ने उरई से 'उत्साह' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। उक्त पत्र शीघ्र ही बुंदेलखंड का प्रमुख पत्र बन गया। इसी क्रम में गोरखपुर से 6 अप्रैल 1919 को साप्ताहिक पत्र 'स्वदेश' का प्रकाशन हुआ, जो अंग्रेज हुकूमत की आंखों की किरकिरी बना रहा। इस पत्र के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निम्नलिखित आदर्श वाक्य होता था-

'जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधर नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।'

सचित्र मासिक पत्रिका 'ललिता' ने सितंबर 1919 ई. के अंक में 'साहित्य गति' शीर्षक के अंतर्गत 'स्वदेश' नामक उक्त साप्ताहिक पत्र की प्रशंसा में लिखा कि 'स्वदेश (गोरखपुर) का विजयांक बहुत अच्छा निकला है।' इन पत्रों ने जन साधरण में एक नई चेतना पैदा कर दी।

बिहार में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने में साप्ताहिक पत्र 'देश' का योगदान अद्वितीय था। उक्त साप्ताहिक पत्र का उदय सन् 1919 ई. में पटना से हुआ। इसके संबंध् में मासिक पत्रिका 'लक्ष्मी' ने लिखा था कि 'देश' साप्ताहिक-पत्र पटना से निकला है। वार्षिक मूल्य 'ढाई रुपए' है। उक्त पत्र समयानुकूल राजनीतिक विषयों की चर्चा करता है। संपादक है, बिहार के कर्तव्य परायण उत्साही नेता बाबू राजेन्द्र प्रसाद।

'बिजौलिया सत्याग्रह' के अग्रणी नेता विजय सिंह पथिक को गांधीजी ने बंबई बुलाया। वहां निर्णय हुआ कि राजस्थान में जन-जागृति लाने हेतु क्यों न एक समाचार पत्र की नींव रखी जाय? इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु सन् 1919 ई. में पथिक जी वर्धा पधारे। यहां से उनके संपादकत्व में 'राजस्थान केसरी' नामक साप्ताहिक पत्र का उदय हुआ। इसी क्रम में पथिक जी ने अजमेर से 'नवीन राजस्थान' नामक एक और साप्ताहिक पत्र निकाला। ऐसे ही वीर योद्वाओं की भावनाओं को 'केसरी' ने सन् 1919 ई. के अंक में इस प्रकार व्यक्त किया- 'लोगों में जागरूकता, सुख-शांति और उत्साह पैदा करना, यही पत्रकार की दृष्टि में हमारा प्रथम कर्तव्य है।'

गांधी जी ऐसी ही पवित्र विचारधारा को प्रेरित कर रहे थे। उनकी प्रेरणा से मौन एवं कुंठित जन निर्भय होकर अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने का साहस करने लगे। भयग्रस्त चेहरों पर धीरे-धीरे मुस्कान लौटने लगी। सदैव झुकी रहने वाली आंखें अब सामने देखने का साहस करने लगीं। इस प्रकार गांधी जी ने राजनीतिक जागृति के विकास में निर्भीकता के साथ ब्रिटिश सरकार की नीतियों एवं कार्याेंं की भर्त्सना एवं कटु आलोचना अपने लेखों एवं भाषणों में समय पर प्रस्तुत की। ताकि सोई हुई भारतीय जीनवशक्ति अपनी संपूर्ण प्रचंडता के साथ जाग उठे।

नवजीवनः महात्मा गांधी ने गुजरात के राष्ट्रीय जागरण के इस महायज्ञ में अपना सर्वस्व होम करने का निमंत्राण 7 अक्टूबर 1919 ई. को गुजराती भाषा में 'नवजीवन' नामक साप्ताहिक पत्रा प्रकाशित कर उसके माध्यम से देना प्रारंभ किया था। उन्होंने उक्त पत्रा में अपने विचारों को सरल, स्पष्ट एवं आडंबर रहित भाषा में प्रस्तुत कर वहां पर बिखरी हुई जन शक्ति को न केवल संगठित किया बल्कि उसे राष्ट्रीय विचारधारा के प्रवाह से भी जोड़ दिया था।

गांधी जी के संपादकत्व में एक आना मूल्य के इस साप्ताहिक पत्र की ग्राहक संख्या देखते ही 1200 तक जा पहुंची। गांधी जी को विश्वास था कि यदि उनके पास मुद्रण के पर्याप्त साधन उपलब्ध् हों तो पत्र के ग्राहकों की संख्या बीस हजार तक पहुंच सकती थी। जनता इस पत्र के माध्यम से अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गई थी। गांधी जी की लोकप्रियता दिनोंदिन इन पत्रों के माध्यम से बढ़ रही थी। 'नवजीवन' साप्ताहिक पत्र के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्होंने अपने पाठकों यही बताया था कि उन्हें इस पत्र का संपादन सितंबर 1919 में शंकर लाल बैंकर और इंदुलाल याज्ञिक ने सौंपा था। उस समय उन्होंने शंकर लाल बैंकर तथा याज्ञिक से कहा था कि 'नवजीवन' से प्राप्त होने वाली आय का उपयोग सार्वजनिक हित के लिए ही किया जाएगा।

परिणाम

यंग इंडियाः 'नवजीवन' गुजराती साप्ताहिक पत्र के उदय होने के एक दिन बाद 8 अक्टूबर सन् 1919 ई. को अहमदाबाद से गांधी जी के संपादकत्व में 'यंग इंडिया' साप्ताहिक पत्र के रूप में निकलने लगा। इससे पूर्व यह पत्र बंबई से अर्ध-साप्ताहिक पत्र के रूप में प्रकाशित होता था। 'यंग इंडिया' के प्रथम अंक में गांधी जी ने पत्रकारिता से संबंधित अपने मूलभूत सिद्धांतों को प्रस्तुत करते समय यह स्वीकार किया था कि उनके लिए अंग्रेजी भाषा के पत्र का संपादन करना कोई गौरव की बात या प्रसन्नता को विषय नहीं था। बल्कि उन्होंने इस पत्र का संपादन मात्र इसलिए किया था ताकि वे लोग जो गुजराती अथवा हिंदी भाषा से अनभिज्ञ थे, इस पत्र के माध्यम से राष्ट्रीय विचारधारा से जुड़ सकें। आरंभ में एक आना मात्रा मूल्य के इस पत्र की ग्राहक संख्या 1200 से अधिक थी। लेकिन जैसे ही असहयोग आंदोलन की चिंगारी फूटी वैसे ही इस पत्र के ग्राहकों की संख्या में बृद्वि होने लगी। गांधी जी के गिरफ्तारी तक इस पत्र की चालीस हजार प्रतियां प्रति सप्ताह बिकने लगीं थीं।

सन् 1922 ई. में उनके ऊपर एक ऐतिहासिक मुकदमा चला। उनके ऊपर लगाए गए अभियोग का आधार साप्ताहिक 'यंग इंडिया' के 15 सितंबर और 26 सितंबर सन 1921 ई. तथा 23 फरवरी सन् 1922 ई. के अंकों में प्रकाशित तीन लेख थे। पहला था- 'राजभक्ति से भ्रष्ट करने का आरोप', दूसरा 'एक उलझन और उसका हल' और अंतिम था 'गर्जन तर्जन'। ब्रिटिश सरकार इन लेखों को आपत्ति जनक मानकर गांधी जी और शंकर लाल बैंकर को गिरफ्तार कर लिया।[20,21]

गांधी जी ने 'यंग इंडिया' के माध्यम से जन-जागृति के द्वारा देशव्यापी आंदोलन का सूत्रपात किया और ब्रिटिश सरकार को अनेक चुनौती भरे पत्र लिखे। वहीं उन्होंने सामाजिक और धर्मिक परिप्रेक्ष्य में सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, संरक्षता, गौरक्षा, खादी, श्रम कल्याण तथा हिंदू-मुस्लिम एकता जैसे रचनात्मक प्रसंगों पर उनकी लेखनी निरंतर चलती रही। जन उपयोगिता की दृष्टि से उन्होंने ऐसे विषयों पर भी प्रकाश डाला जो मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से उपयोगी अवश्य थे किंतु 'समाचार' नहीं थे।

आजः काशी नगरी से कृष्ण जन्माष्टमी के दिन शिव प्रसाद गुप्त ने 5 सितंबर 1920 ई. को दैनिक पत्र 'आज' का प्रकाशन प्रारंभ किया। हिंदी के दैनिक पत्रों में 'भारत मित्र' के बाद काशी में 'आज' दैनिक ने काफी ख्याति अर्जित की। बाबूराव विष्णुराव पराड़कर ने 'आज' के प्रथम अंक में लिखा था कि 'हमारा उद्देश्य अपने देश के लिए सब प्रकार के स्वातंत्रय का उपार्जन है। हम हर बात में स्वतंत्र होना चाहते हैं। हमारा लक्ष्य यह है कि हम अपने देश का गौरव बढ़ाएं, अपने देशवासियों में स्वाभिमान का संचार करें।'

गोरखपुर में हुए भयंकर अग्निकांड और हत्याओं का चौरी-चौरा कांड के रूप में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का अविस्मरणीय पृष्ठ बन गया। उसके संदर्भ में दैनिक 'आज' ने जो अभिमत प्रकट किया था, वह गांधी जी की अहिंसा की नीति के अनुरूप था। पत्र ने लिखाः 'जिस आंदोलन में देश लगा हुआ है उसकी एक शर्त को हमने मूल धर्म मान रखा है। तो हिंसा करना, उत्पात मचाना मक्कारी और दगाबाजी है।' इस पत्र ने गांधी जी के विचारों को जनता के बीच पहुंचाने में काफी मदद की। इससे उनके साथ एक बड़े हुजूम को जुड़ने में मदद मिली।

हिंदी नवजीवनः गुजरात में हिंदी पत्रकारिता के विकास में गांधी का महत्वपूर्ण योगदान है। हरिभाऊ उपाध्याय, जो कुछ वर्षों तक 'हिंदी नवजीवन' नामक साप्ताहिक पत्र के संपादन कार्य में गांधी जी के सहयोगी रहे थे, उन्होंने प्रसंगवश इस संदर्भ में लिखा कि जून 1921 ई. में वे उक्त पत्र के प्रकाशन के संदर्भ में बंबई गये थे। तब उन्हें गांधी जी और जमना लाल बजाज के द्वारा ही पत्र के सफल होने की आशा बंधी थी। 15 अगस्त 1921 ई. को 'हिंदी' नवजीवन गांधी जी के संपादकत्व में निकला। गांधी जी का चिंतन, देश और समाज के सर्वांगीण विकास का चिंतन था। अतः उन्होंने इस विचार से रचनात्मक कार्यक्रमों जैसे वर्ण, धर्म, श्रम-धर्म, मद्य निषेध्, अस्पृष्यता निवारण, दहेज प्रथा, बाल विवाह, संतति विग्रह, स्त्रियों के लिए समानता का अधिकार इत्यादि तथा राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, स्वराज्य, सत्याग्रह एवं हिंदू-मुस्लिम एकता तथा वायसराय को चुनौती भरे पत्र लिखकर जनजागरण की स्वर लहरी छेड़ी थी। किंतु गोलमेज सम्मेलन की असफलता के पश्चात् न केवल उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया बल्कि 1932 ई. में 'यंग इंडिया', 'नवजीवन', 'हिंदी नवजीवन' पर प्रतिबंध लगा दिया गया। गांधीजी का पत्रकारिता का जीवन बहुत ही संघर्षशील रहा।

हिंदी प्रचारकः उस समय दक्षिण भारत में हिंदी का प्रचार-प्रसार अत्यंत कठिन और दुष्कर कार्य था। किंतु गांधी जी की प्रेरणा से प्रेरित होकर रिषिकेश शर्मा तैलंग ने जनवरी 1922 ई. में 'हिंदी प्रचारक' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रचार कार्यस्थल त्रिपल्लीकेन मद्रास से प्रारंभ किया। कुछ समय बाद यह पाक्षिक-पत्रिका के रूप में उभरी। कालांतर में दक्षिण भारत की 'हिंदी प्रचार' सबका मुख पत्र बन गया। सन् 1926 ई. तक रिषिकेश शर्मा तैलंग समर्पित भाव से इस पत्रिका से जुड़े रहे। 1927-1928 ई. तक पंडित देवव्रत विद्यार्थी ने इसका संपादन किया अब यह पत्रिका पाक्षिक से मासिक बन चुकी थी।

त्याग-भूमिः सन् 1928 ई. में अजमेर की धा पर 'त्याग-भूमि' का प्रकाशन एक युगांतकारी घटना थी। श्री हरिभाऊ उपाध्याय जैसे साहित्यिक विद्वान जिसके संपादक हों और गांध्ी जी का जिसे आशीर्वाद प्राप्त हो उस पत्रा में निर्भीक विचारों का प्रकाशन क्यों न हो। त्याग भूमि का आदर्श वाक्य-

'आत्म समर्पण होत जहं, जहां शुभ्र बलिदान।
मर मिटने को साथ जहं, तहं हैं श्री भगवान।'

और नेति-नेति शीर्षक कविता से प्रथमांक का प्रारंभ किया गया था। जिसमें ये पंक्तियां भी थीं-

'हां, अंतस्तल का अंतिम कण, तक मातृ चरण अर्पण कर दे।

वह अमर भिखारी द्वार खड़ा है, उसकी भी झोली भर दे।'

वस्तुतः 'त्याग भूमि' मासिक हो या साप्ताहिक रूप में, अपने उद्देश्य को अक्षरशः निभाती रही।

हरिजन सेवकः गांधी जी के संरक्षण एवं प्रेरणा से 23 फरवरी सन् 1932 ई. को 'हरिजन सेवक' नामक साप्ताहिक पत्र वियोगी हरि के संपादकत्व में दिल्ली से प्रकाशित हुआ। बाद में किशोर लाल मशरुवाला ने इसका संपादन किया। 'हरिजन सेवक' 1942 ई. के आंदोलन के दौरान बंद हो गया था। प्रतिबंध हटने के पश्चात पुनः श्री प्यारे लाल के संपादकत्व में निकलना प्रारंभ हुआ। गांधी जी के देहावसान पर कुछ समय के लिए इसका प्रकाशन स्थगित रहा। इस पत्र का मुख्य उद्देश्य अस्पृश्यता-उन्मूलन करना था। प्रति आना मूल्य के इस पत्र के प्रथमांक में गांधी जी, बिड़ला जी तथा स्वामी सत्यदेव के लेखों के साथ-साथ मैथिलीशरण गुप्त की एक छोटी कविता भी प्रकाशित हुई थी।

'हरिजन सेवक' में हरिजन सेवक का धर्म, शिमला में हरिजन सेवा, गरीब गाय, प्रौढ़-शिक्षण, भंगी बस्ती में क्यों? पशु पालन, खादी क्रांति, चरखा इत्यादि शीर्षकों में लिखे गए उनके हिंदी कृतित्व पर प्रकाश डालते थे। गांधीजी के आह्वान पर 1 मई 1946 को यह पत्रा उर्दू में छपने लगा था। इसकी मात्र 250 प्रतियां छपती थीं। कालांतर में गांधी जी के विचारों की सारगर्भित अभिव्यक्ति का यह पत्र सन 1956 तक पहुंचते-पहुंचते अतीत बन गया।

हरिजनः गांधी जी रचनात्मक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। तब अंग्रेज सरकार ने उनके द्वारा संपादित समाचार पत्र पर प्रतिबंध लगा दिया तो गांधी जी बिना हताश हुए अस्पृश्यता निवारण जैसे रचनात्मक कार्य में जुट

गए। उन्होंने इस कार्य हेतु 'हरिजन' नामक एक साप्ताहिक पत्र का अंग्रेजी संस्करण 19 पफरवरी सन् 1935 ई. को आर.वी.शास्त्री के संपादकत्व में आर्यभट्ट प्रेस पूना से प्रकाशित किया। एक आना का यह पत्र 'हरिजन सेवा संघ' का मुख पत्र था। गांधी जी का इसका अंग्रेजी संस्करण निकालने के पीछे उद्देश्य था दक्षिण भारत और बंगाल की जनता के बीच अपने विचारों को सहजता के साथ समझाना।

समताः हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में 'हरिजन' के बाद दूसरा दीर्घजीवी हरिजन पत्र जून 1934 ई. को अल्मोड़ा से प्रकाशित 'समता' नामक साप्ताहिक पत्र था। महात्मा गांधी ने अल्मोड़ा प्रवास के दौरान उनकी प्रेरणा से दलितों, हरिजनों और अछूतों के पहाड़ में 'दूसरे अंबेडकर' कहे जाने वाले मुंशी हरिप्रसाद टम्टा के विशेष प्रयासों का ही परिणाम था। उक्त साप्ताहिक पत्र का संपादन लक्ष्मी देवी ने कुशलता पूर्वक किया। एक संपादिका के रूप में लक्ष्मी देवी ने दलित एवं पिछड़े वर्ग की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं से उबारा। इसी प्रकार उन्होंने नारी शिक्षा एवं उनकी राजनीतिक चेतना को जाग्रत करने के लिए 'समता' में अनेक संपादकीय लेख लिखे थे।

ग्रामोद्योग पत्रिकाः सन् 1937 ई. में अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ मगनवाड़ी वर्ध के तत्वावधन में 'ग्रामोद्योग' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका के संपादक जे.सी.कुमारप्पा थे। पत्रिका में मगनवाड़ी में किए जाने वाले प्रयोगों की रिपोर्ट रहती थी।

नई तालीमः सन् 1936 में गांधी जी प्रेरणा से प्रेरित होकर हिंदुस्तानी तालीमी संघ वर्धा की ओर से 'नई तालीम' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका की संपादिका श्रीमति आशा देवी थीं। यह पत्रिका सेवाग्राम तालीमी संघ का मुखपत्र थी। इसमें बुनियादी शिक्षा पद्वति पर लेख प्रकाशित होते थे। गांधी जी ने शिक्षा जगत को बुनियादी शिक्षा के रूप में एक नवीन विचार प्रदान किया।

सबकी बोलीः सन् 1936 ई. में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्ध के तत्वावधन में 'सबकी बोली' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। गांधी जी के विचारों को अपनी दृष्टि से संपादित करने वाले इस पत्रिका के संपादक काका कालेलकर और श्रीमन्नारायण अग्रवाल थे।

सर्वोदयः गांधी जी की सर्वोदयी कल्पना को मूर्त रूप देने के लिए सन् 1936 ई. में गांधी सेवा संघ वर्धा ने 'सर्वोदय' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। यह पत्रिका काका कालेलकर और दादा धर्माधिकारी के संपादकत्व में निकली। भारत छोड़ो आंदोलन के प्रारंभ तक इसका प्रकाशन निरंतर होता रहा। इसमें छोटी-छोटी टिप्पणियां और संपादकीय के अतिरिक्त सर्वोदय विचार के विभिन्न पहलू सरल और सुपाठ्य भाषा में लिखे जाते थे। इसके लेख प्रायः गांधी विचार पर केंद्रित होते थे।

निष्कर्ष

जीवन साहित्यः गांधी जी के विचारों एवं उनकी जन-जागरण व कल्याणकारी भावनाओं से परिपूर्ण 'जीवन-साहित्य' नामक मासिक पत्रिका 1940 ई. में हरिभाऊ उपाध्याय, यशपाल जैन, विट्ठल दास मोदी और महावीर प्रसाद के संपादन में सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली से प्रकाशित हुई। यह अहिंसक नवरचना का मासिक पत्र प्रारंभ में उच्च कोटि का साहित्यिक पत्र था।

राष्ट्र भाषाः हिंदी-हिंदुस्तानी के प्रचार के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा 15 जून 1941 ई. में 'राष्ट्रभाषा' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया।[22]

खादी जगतः 15 जुलाई 1941 ई. को सेवाग्राम वर्धा के तत्वावधन में आशा देवी और श्रीकृष्णदास गांधी के संपादकत्व में 'खादी-जगत्' नामक मासिक पत्र का प्राकाशन प्रारंभ हुआ। उक्त पत्र में खादी से संबंधित लेख छपे रहते थे। वस्तुतः खादी के अर्थशास्त्रा पर आधरित तथा अखिल भारतीय चरखा संघ के परीक्षणों के आधार पर तैयार किए गए लेखादि का समावेश रहता था। इसमें खादी परीक्षा की सूचना एवं उसके परिणाम भी प्राकशित होते थे।

संसारः सन् 1943 ई. में संसार प्रेस काशी से बाबूराव विष्णुराव पराड़कर द्वारा स्थापित 'संसार' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसका संपादन कमलापति त्रिपाठी और काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर' के हाथों में था। यह पत्र कांग्रेसी नीतियों का समर्थक था। सम-सामयिक समस्याओं पर लेख एवं टिप्पणियां प्रभावपूर्ण होती थीं।

नया हिंदः 'हिंदी-हिंदुस्तानी' भाषा से संबंध्ति गांधी जी के विचारों को प्रचारित एवं प्रसारित करने के उद्देश्य से जुलाई 1946 ई. को पंडित सुंदरलाल ने प्रयाग से 'नया हिंद' नामक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया था। यह दो लिपियों में छपता था और अरबी, फारसी भाषा से प्रभावित था।

गांधी मार्गः गांधी स्मारक निधि बंबई के तत्वावधन में गांधीवाादी विचारधारा से ओतप्रोत 'गांधी मार्ग' नाम त्रौमासिक पत्रिका हिंदी और अंग्रेजी दो भाषाओं में निकलती थी। कालांतर में यह पत्रिका गांधी शांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली से द्वैमासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित होने लगी। आज के संदर्भ में गांधी के विचारों की प्रासंगिकता का परिचय 'गांधी-मार्ग' के संपादकीय एवं उच्चस्तरीय लेखों में सहज ही मिल जाता है। वर्तमान में यह पत्र गांधी जी के आदर्शों, सिद्धांतों व उनके विचारों का प्रचार व विश्लेषण करने, जनता तक उनको पहुंचाने का कार्य कर रहा है।

अतः हम कह सकते हैं कि गांधी की पत्रकारिता की शुरुआत से लेकर अंतिम समय तक संघर्षों का लंबा इतिहास रहा है। कभी गांधी पत्रकारिता पर भारी दिखते हैं तो कभी पत्रकारिता गांधी पर। यह शह-मात का खेल गांधी के जीवन पर्यंत बना रहा।[23,24]

संदर्भ

[1] भट्टाचार्य, बी. (2002)। गांधी, लेखक (प्रथम पुनर्मुद्रण)। नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।

[2] कूपर, एल. (1960). अरस्तू की बयानबाजी . न्यू जर्सी: अप्रेंटिस हॉल।

[3] महात्मा गांधी के एकत्रित कार्य **(1961)**। खंड **III.** नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।

[4] महात्मा गांधी के संकलित कार्य। **(1975)** वॉल्यूम एलएक्सआई. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।

[5] देसाई, एमवी **(1988)**। **1988** के लिए गांधी रीडर । नई दिल्ली: नामीडिया फाउंडेशन।

[6] फिशर, एल. **(1994).** महात्मा गांधीजी का जीवन **(**तीसरी छाप**)**। नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स.

[7] गाल्टुंग, जे. **(2006).** शांति पत्रकारिता एक नैतिक चुनौती के रूप में। ग्लोबल मीडिया जर्नल **(**भूमध्यसागरीय संस्करण**), 1(2): 1-5**।

[8] गुप्ता, एलएन **(1998)**। क्रॉस-सांस्कृतिक संचार: वैश्विक परिप्रेक्ष्य। नई दिल्ली: संकल्पना.

[9] गुप्ता, वीएस **(2012)**। महात्मा गांधी और मास मीडिया। **7** सितंबर **2012** को वर्ल्ड वाइड वेब से लिया गया: **http://www.mkganthi.org/mass_media.htm**

[10] हनीत्ज़स्च, टी. **(2004)**। शांति सेना के रूप में पत्रकार? शांति पत्रकारिता और जनसंचार सिद्धांत। पत्रकारिता अध्ययन, **5 (4), 483-495**।

[11] मूर्ति, एनके **(1966)**। भारतीय पत्रकारिता. मैसूर: मैसूर यूनिवर्सिटी प्रेस.

[12] मैक गोल्ड्रिक, ए. और लिंच, जे. **(2000)**। शांति पत्रकारिता: यह क्या है? यह कौन करे? **21** सितंबर **2014** को **http://www.transcend.org/tri/downloads/McGoldrick LinchPeace-Journalism.pdf** से पुनर्प्राप्त किया गया

[13] मूर्ति, डीवीआर **(2001)**। विकासात्मक पत्रकारिता. नई दिल्ली: प्रमुख प्रकाशक।

[14] मूर्ति डीवीआर **(2010)**। गांधीवादी पत्रकारिता: क्या यह आज प्रासंगिक है? नई दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स।

[15] नंदा, बीआर **(2012)**। गांधी: संपादक. **6** सितंबर **2012** को वर्ल्ड वाइड वेब से लिया गया: **http://www.mkganthi.org/articles/g_editor.htm**

[16] नटराजन, जे. **(2000).** भारतीय पत्रकारिता का इतिहास, **(**दूसरी छाप**)**। नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।

[17] नेशनल मीडिया सेंटर, **(1997)**। एक महान संचारक का निर्माण. नई दिल्ली: लेखक.

[18] परेल, ए.जे. **(2002)**। गांधीवादी स्वतंत्रता और स्वशासन। ए जे परेल **(**एड.**)** में। गांधीजी, स्वतंत्रता और स्वशासन, पृष्ठ **1-24**। नई दिल्ली: विस्तार प्रकाशन।

[19] पार्थसारथी, आर. **(1989)**। भारत में पत्रकारिता, नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स।

[20] साईनाथ, पी. **(2009, 30** नवंबर**)**। मास मीडिया: बहुत सारा पैसा? हिन्दू ।

[21] सीताराम, केएस **(1991)**। संस्कृति और संचार: एक विश्व दृष्टिकोण। मैसूर: एसोसिएटेड प्रिंटर्स।

[22] सेमिनरी केस **(1978, 1** दिसंबर**)**। हेराल्ड जर्नल ।

[23] त्रिखा, एनके **(1998)**। नैतिक एवं नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना। एमआर दुआ **(**एड.**)** में। प्रेस ऐज़ लीडर ऑफ़ सोसाइटी, पृष्ठ **119.** नई दिल्ली: आईआईएमसी।

[24] विलानिलाम, जेवी **(2005)**। भारत में जनसंचार: एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य। नई दिल्ली: सेज प्रकाशन।